माननीय राज्यपाल, हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 3 फरवरी, 2015 को एन0डी0आर0आई0, करनाल में आयोजित 12वें कृषि विज्ञान सम्मेलन में दिया गया भाषण।

Dr. S. Ayyappan, DG Indian Council of Agriculture Research, also the President of National Academy; Dr. Sanjay Raja Ram, Dr. R.S. Paroda, Dr. R.B. Singh, Dr. A.K. Srivastva Director NDRI, Dr. David Bergvinson, Dr. J. Voegele World Bank Washington, Dr. Jimmy Smith Narroby Kenya, Dr. Kevin Gallagher, Dr. M.P. Yadav, अन्य सभी उपस्थित वैज्ञानिक महानुभाव, वे सभी महानुभाव जिनको मैने आज विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियों के लिए पुरस्कृत किया है, विश्वविद्यालयों के सभी Vice Chancellors, Participents, Media Persons, अन्य सभी उपस्थित भाईयो और बहनो!

यह बहुत ही महत्वपूर्ण सत्र है। इस सम्मेलन में जो कुछ आप करने वाले हैं उसके लिए भी उद्घाटन सत्र होने के कारण यह महत्वपूर्ण सत्र है। आप सबके बीच में उपस्थित होकर यहाँ पर मैने जो कुछ भी सुना है, इस सम्मेलन में जो कुछ आप करने वाले हैं, उसका अहसास करते हुए मुझे अति प्रसन्नता हो रही है। इस हॉल की कैपिस्टी एक हजार है। लेकिन श्रीवास्तव जी ने 500 की और अतिरिक्त व्यवस्था की है। इसलिए इतना बड़ा समुदाय है। Lower house भी फुल है और upper house भी फुल है, लोकसभा और राज्यसभा दोनों। इतना सब कुछ होने के बाद भी बहुत बड़ी संख्या में मुझे लोग व प्रतिभागी भाई खड़े होकर देख व सुन रहे हैं। इसलिए उपस्थिति sufficient नहीं है, surplus है, It is overflowing. मैं अपेक्षा करता हूँ कि यह 12वाँ कृषि विज्ञान सम्मेलन, 12th agricultural Science Congress ऐसे निष्कर्ष जरूर निकालेगी कि जिस तरह उपस्थिति surplus है, उपस्थिति overflowing है उसी तरह अपने प्रिय देश में खाद्यान्न भी surplus और overflowing होगा।

मुझे बहुत प्रसन्नता है कि यह कृषि विज्ञान सम्मेलन हरियाणा राज्य में हो रहा है। NDRI के बारे में मैं जानता हूँ कि देश की और विश्व की बहुत Renound संस्था है। National Academy ने इसको मौका दिया है। इसके लिए मैं संस्था को इस आयोजन के लिए भी बधाई देता हूँ। आप सबका भी, जो देश और विदेश से आकर के यहाँ पर उपस्थित हुए हैं, स्वागत करता हूं। यह एक नेशनल cause है। It is a national cause. It is a national work, for the venture of the country, for the entire world. इसलिए इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए मैं हरियाणा की अढ़ाई करोड़ जनता की तरफ से आप सबका अभिनंदन करता हूँ।

मैं जानता हूँ कि देश के लिए और विश्व के लिए खाद्यान्न पहली आवश्यकता है। मैं अपने बारे में जब स्मरण कर रहा था तो 1960–61 में मुझे याद आता है कि अपने देश में गेहूँ की इतनी कमी थी कि आस्ट्रेलिया से आने वाले गेहूँ से हमें अपना पेट भरना पड़ता था। लेकिन आज स्थिति बदल गई है। आज देश के अंदर खाद्यान्न की कोई कमी

नहीं है। इसी के परिणामस्वरूप लोकसभा ने, केंद्र की सरकार ने फूड सिक्योरिटी कानून पास किया है और देश में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति की फूड की सिक्योरिटी ली है। लेकिन इस अवसर पर मैं एक बात और कहना चाहता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति की हमने फूड की सिक्योरिटी तो ले ली। लेकिन फूड सिक्योरिटी के लिए जितना फूड चाहिए वह हमेशा देश के अंदर पैदा होता रहे इसके लिए बहुत सारी चुनौतियाँ हैं। इसमें कई चुनौतियाँ रहती हैं। इसमें सिंचाई भी है। इसमें rains भी हैं। इसमें climate change भी है। इसमें fertilizers भी हैं। खेत की, agricultural land की fertility भी है। इसलिए किसी तरह से भी कमी न हो इस सब बात की चिंता करने का काम इस कृषि विज्ञान सम्मेलन का है।

इस अवसर पर मैं एक बात और कहना चाहूँगा कि जिस तरह से हमने देश के प्रत्येक नागरिक को फूड सिक्योरिटी दी है उसी तरह प्रत्येक farmer को भी livelihood की सिक्योरिटी चाहिए जो अभी देना बाकी है। हमारे एंकर बहुत अच्छी बात कह रहे थे कि हम अपेक्षा क्या करते हैं? हम अपेक्षा यह करते हैं कि हमारे किसान देश में रहने वाले सब लोगों का पेट भरें। लेकिन यह तो एकतरफा बात हुई। इसके बदले में क्या होना चाहिए? इसके बदले में यह होना चाहिए कि जिनके बल पर हम पेट भर रहे हैं उनकी हम जेब भरें।

आप जरा निगाह फैलाएंगे कि अपने देश के अंदर उत्पादन की दृष्टि से, food products की दृष्टि से, food and other product की दृष्टि से तो सब sufficient है। हम पर्याप्त मात्रा में निर्यात भी करते हैं। लेकिन जिनके बल पर हम self sufficient हैं, जिनके बल पर हम सब कुछ रखते हैं, food security जैसी व्यवस्था हमने की है, उन किसानों की क्या हालत है। देश के किसानों को उनकी मेहनत का मूल्य पूरा नहीं मिल पाता, उनके जीवनयापन के लिए जो प्राथमिक आवश्यकताएँ हैं वे पूरी नहीं हो पातीं। हमारे देश में उसका परिणाम यह होता है कि हजारों की संख्या में किसान आत्महत्या करते हैं। इसलिए उस तरफ भी हमारा ध्यान जाना चाहिए। जितना पेट भरना आवश्यक है, जितना food मिलना आवश्यक है उतनी ही उसकी भी चिंता करने की हमें जरूरत है जो food प्राप्त कराने वाला, देने वाला किसान है। इसलिए हम ऐसी भी बातें सोच सकते हैं कि किसान पूरे 12 महीने व्यस्त रहें। खेत में अन्न उत्पादन के अलावा और भी कुछ चीजें हो सकती हैं क्या? जिसमें land का उपयोग हो सके, उनके समय का उपयोग हो सके, उनके पास जो संसाधन हैं, जो उपकरण हैं उनका दूसरे प्रकार से उपयोग हो सके। इसकी तरफ भी हमें ध्यान देने की जरूरत है।

इस बार आपका यह कृषि विज्ञान सम्मेलन ऐसे प्रदेश में हो रहा है जो देश में नम्बर एक है। पंजाब नम्बर एक पर है, हरियाणा नम्बर दो पर आता है। लेकिन फिर भी पंजाब और हरियाणा मिलाकर नम्बर एक पर हैं। इसलिए नए–नए उपकरणों की, नए–नए devices, नई–नई statigies की सोचने की जरूरत है।

Director Srivastava श्रीवास्तव जी ने एक बहुत अच्छी बात बताई। जब हम स्वतंत्र हुए थे तब प्रतिव्यक्ति, per capta land की उपलब्धता 4.8 एकड़ थी। आज यह घटते–घटते 0.09 एकड़ पर पहुँच गई। इसलिए हमें ऐसी व्यवस्था भी करनी पड़ेगी कि यह आंकड़ा नीचे ही न गिरता जाए। कहीं ऐसा ना हो जाए कि जो लोग खेती पर निभर्र करते हैं वे ही landless हो जाएं, उनके पास भूमि ही न रहे। तब ऐसी स्थिति में क्या होगा?

यह देश एक ऐसा देश है जिसमें क्रान्ति कभी नहीं होती। इस देश के अंदर आतंकवादी कभी नहीं पनप पाते, न ही आतंकवाद इस देश के अंदर कभी होता है। भारत बहुत अनोखा देश है। आप पूरे विश्व का इतिहास देख लीजिए, जबसे मानव पृथ्वी पर आया है, जबसे इतिहास ने जन्म लिया है और जो लेखा–जोखा इतिहास का मिलता है उसको पढ़कर देख लीजिए। पूरे विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है जिसने किसी के ऊपर आक्रमण नहीं किया। यह आध्यात्मिक और सहिष्णु देश है। और मुझे लगता है यह इसलिए है कि यह कृषि–प्रधान देश है। खेती एक ऐसा धंधा है जिसमें लोग नैतिकता से चलते हैं, नियम से चलते हैं, कानून से चलते हैं। यही भारतवर्ष की विशेषता है।

अंत में मैं एक बात की ओर और ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा कि भारतवर्ष के अंदर सब कुछ है। दुनिया में जो कुछ भी है वह भारतवर्ष के अंदर है। लेकिन जो कुछ भारतवर्ष के अंदर है उसका ठीक से उपयोग करके, विश्व को हम बता सकें कि जो सब कुछ हमारे देश के अंदर है इसका ठीक से उपयोग करते हुए हम विश्व में नम्बर एक हो सकते हैं। भारतवर्ष के अंदर कभी कहा जाता था कि समुद्र के पार मत जाइए। Don't cross the ocan. समुद्र पार करना अपने यहाँ मना था। शायद उसका एक ही अर्थ होगा कि समुद्र के पार मत जाइए, समुद्र के पार आप जाओगे तो आप भारतीय नहीं रहोगे। भारत के जो मूल्य हैं, भारत का जो कल्चर है, भारत की जो जीवन पद्धति है, भारत की जो सोच है, भारत की जो मानसिकता है, भारत का जो mindset है, वह गड़बड़ा जाएगा। लेकिन अब दुनिया बदल गई है। आज देश के प्रधानमंत्री जी क्या कहते हैं? आज देश के प्रधानमंत्री जी कहते हैं कि पूरे विश्व के अंदर कोई देश अगर यंग है तो वह भारत है। भारत एक young country है। 35 वर्ष से कम के लोगों का 65 प्रतिशत है। इसलिए वे कहते हैं कि पूरे विश्व के अंदर हमारे भारतवर्ष के नौजवान स्किल में इतना हुनर प्राप्त करें, इतनी योग्यता प्राप्त करें कि वे पूरे विश्व में छा जाएं, अपनी तरूणाई के बल पर, अपने पुरूषार्थ के बल पर, अपनी स्किल के बल पर, अपने हुनर के बल पर पूरे विश्व के अंदर छा जाएं। उन्होंने फिर Make in India का नारा दिया। यह भारत की विशेषता है।

चीन में एक संत हुए है कंफ्युशियस। उनसे उनके शिष्यों ने पूछा कि एक राष्ट्र के लिए, एक देश के लिए कम से कम कितनी चीजों की आवश्यकता है? शब्द कम से कम था। संत ने अपने शिष्यों से कहा कि किसी भी देश, किसी भी राष्ट्र के लिए सबसे पहले देश की सुरक्षा चाहिए। बाहर से कोई आक्रमण न हो, उसकी sovereignty बनी रहे,

उसकी सार्वभौमिकता बनी रहे, उसके स्वामित्व पर कोई हमला न हो, इसलिए देश में सेना चाहिए। दूसरे उन्होंने कहा कि देश के अंदर जितने लोग रहते हैं वे अमन और चैन से रहें, शान्ति से रहें, यह बड़ी आवश्यकता है। इसको बनाए रखने के लिए law and order चाहिए, Internal security चाहिए। यह भी देश की आवश्यकता है। इसलिए पुलिस चाहिए। तीसरे देश में जितने लोग रहते हैं उनको पेट भरने के लिए जो उनकी प्राथमिक आवश्यकता है, जिससे जिंदा रहते हैं वह चाहिए। अर्थात अन्न चाहिए। और चौथा उन्होंने कहा कि देश के अंदर जो लोग रहते हैं वे भीड़ नहीं हैं, वे कहीं से भी आकर इकट्ठे हो गए, ऐसा कोई सम्मेलन नहीं है। देश के अंदर रहने वाले लोग उस देश के पुत्र हैं, उस देश के घटक हैं, उस देश के नागरिक हैं। इसलिए उस देश के अंदर रहने वाले जितने लोग हैं उनके मन में उस राष्ट्र के प्रति आस्था चाहिए, भक्ति चाहिए। यह चौथी जरूरी चीज है।

वैसे तो आप politics के अंदर और कई पुस्तकों के अंदर राष्ट्र के आवश्यक तत्व कौन से हैं, What are the important elements of a nation पढ़ते होंगे। उसमें इतिहास भी आता है, संस्कृति भी आती है। और भी कई चीजें आती हैं। लेकिन उन संत ने, कंफ्युशियस ने चार चीजें बताईं। लेकिन शिष्य भी कोई कम नहीं थे। शिष्यों ने फिर उनसे पूछा कि ये चार चीजें जो आपने बताईं, अगर उनमें से कोई एक चीज कम करनी हो तो आप कौन सी करेंगे? यानी इन चारों चीजों में से वे शिष्य, संत से priority तय कराना चाहते थे। Which is more important?

संत ने कहा कि वैसे ही आपने कम से कम चीजें पूछी थीं, तो अनिवार्य चीजें ही बताई हैं, कम कैसे करें? शिष्यों ने कहा कि नहीं–नहीं कम करना हो तो किसे करेंगे आप? तो संत शिष्यों को कहता है कि कम करना है तो सेना को कम कर देंगे। देश के नागरिकों को ही हम ट्रेनिंग देंगे, उनको ही हथियार देंगे और उनसे कहेंगे कि कहीं से आक्रमण होता है तो खुद रक्षा कीजिए। इसलिए सेना कम कर देंगे।

What is next to reduce? जो तीन चीजें बचीं उसमें से कम करना हो तो किसे करेंगे? संत ने कहा कि उनमें से भी कम करना है तो पुलिस को कम कर देंगे। लोगों को कहेंगे कि ईमानदारी से रहो, नैतिकता से रहो, live and let live. आग वहीं तक फैलाओ जहाँ तक दूसरे को चोट नहीं लगती। आग नहीं लगनी चाहिए। यह कहेंगे और पुलिस को कम कर देंगे।

कोशिश यहीं तक नहीं रूकने वाली थी। उन्होंने कहा कि जो दो चीजें रह गईं उनमें से कम करना हो तो किसे करेंगे? अब तो पेट भरने की चीज और एक राष्ट्र के प्रति आस्था बची थी। जब इन दोनों में से कम करने के लिए कहा तो संत ने उनसे कहा कि अगर इन दोनों में से भी कम करना है तो फिर मैं यह कहता हूँ कि दोनों में से भी कम करने का जब मौका आएगा तो हम देशवासियों को कहेंगे कि भूखों मर जाओ लेकिन देश के प्रति आस्था को मत छोड़ो। यही तुम्हारा देश, यही राष्ट्र, तुम्हारा माता और पिता है।

इसलिए अपने देश के अंदर आप कोई भी योजनाएँ लागू करिए, किसी भी क्षेत्र की कितनी भी विज्ञान कांग्रेस करिए। इस आस्था की बहुत बड़ी आवश्यकता है। आज 21वीं सदी में भारतवर्ष के अंदर उत्थान में कोई कमी अगर है तो वह यह है कि हम अपने लिए तो सब कुछ सोचते हैं, अपने बाद फिर परिवार की सोचते हैं। Nation is not first. वरीयता राष्ट्र को नहीं देते।

इसलिए जीएं तो राष्ट्र के लिए जीएं। देश हमें देता है सब कुछ। आप कल्पना करो कि बिना देश के, बिना समाज के हम जिंदा रह सकते हैं? वैज्ञानिक हो, डॉक्टर हो, इंजीनियर हो, व्यापारी हो, वकील हो, किसी भी profession को आप ले लीजिए, उस profession के अंदर काम करने वाला कोई भी व्यक्ति समाज के बिना जिंदा रह सकता है, देश के बिना जिंदा रह सकता है? अगर कोई रह सकता है तो कोई डॉक्टर अपनी क्लीनिक forest में जाकर खोले। कोई वकील अपना ऑफिस जंगल में जाकर खोले। अगर कोई वकील अपना ऑफिस जंगल में जाकर खोलगा तो उसके पास कौन आएगा? Client आएगा क्या? शेर आएगा दहाड़ता हुआ। और जब दहाड़ता हुआ शेर आएगा तो वकील उससे कहेगा कि देख अगर तू मुझे मारता है, हत्या करता है तो 302 में जाएगा। आप जरा विचार करो उस शेर को 302 समझ में आएगा? इसलिए देष के प्रति आस्था बहुत महत्वपूर्ण बात है। इसकी बहुत जरूरत है। देश हमें देता है सब कुछ।

इसलिए राष्ट्र के स्तर पर कहिए, स्टेट स्तर पर कहिए। ये सारे के सारे सम्मेलन करिए। भगवान ने जो सब कुछ हमको दिया है, हमें सामर्थ्य दिया है वह देश के माध्यम से ही दिया है। जरा इस सम्मेलन की आप कल्पना कीजिए, विदेश के वैज्ञानिक हमारे पास बैठे हैं, world bank के, नैरोबी के, सब यहाँ पर आकर बैठे हैं। हमारे देश के कितने बड़े वैज्ञानिक बैठे हैं, कितने पुरस्कार विजेता बैठे हैं। ये सब किसके लिए बैठे हैं? उसके लिए बैठे हैं जिसके कारण हम सब बने हैं। देश ने हमें जो कुछ दिया है उसका ऋण उतारने के लिए बैठे हैं।

इसलिए इस आस्था को मन में संजोकर काम करने की बहुत जरूरत है जो आज की सबसे बड़ी राष्ट्र की आवश्यकता है, अन्य आवश्यकताओं के साथ। खाद्यान्न की भी आवश्यकता है, self sufficiency की आवश्यकता है। यह रकबा percapita जो घटता चला जा रहा है उससे भी कोई कमी खाद्यान्न में न आए और अन्य भी कई चुनौतियाँ हैं, उनका निराकरण ठीक से कर सकें, यह 12वाँ कृषि विज्ञान सम्मेलन इन बातों पर गंभीरता से विचार करके जरूर निष्कर्ष निकालेगा। आप इस प्रदेश में यह सम्मेलन कर रहे हैं, इसलिए मैं जनता की तरफ से, अपनी तरफ से आपको बहुत–बहुत बधाई देता हूँ और इस सम्मेलन की सफलता की कामना करता हूँ।

जयहिन्द!